Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 11431163

Roll No. 24029000803
Total Mark 55/75.00

Exam MA-III_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A010910T - Sahitya Evam Cinema (Elective)

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5	9B	0/7				
1B	3/5						
1C	4/5						
1D	4/5						
1E	4/5						
1F	3/5						
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	4/5						
2	11/15						
3	0/15						
4	0/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	10/15						
8	0/15						
9A	0/7						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam 14/11/2025 Shift 3rd Room No. 05

Paper Code A010910T Subject Sahitya evam Cinema Year/Sem 3-sem

Name of Candidate: Ragini

Roll No. 24029000803

COE Facsimile

Signature of Invigilator: Rangh

Signature of Candidate: Ragini

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks

Total Marks in Words

Paper Code: A010910T

Signature of Evaluator

PART-III

Course: Master of Arts (Hindi)

Session: 2025-26 Year/Semester: 3-Semester

Subject: Sahitya Evam Cinema

Paper Code: A 0 1 0 9 1 0 T

Exam Date: 1 4 1 1 2 0 2 5

Name of Candidate: RAGINI

Father's Name: VINDHYACHAL SHARMA

महाविद्यालय का कोड College Code: KN009

परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: KN009

परीक्षा का प्रकार Type of Exam: संस्थागत Regular ● | भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex. Student ○ | व्यक्तिगत Private ○ | बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO. 11431163

Paper Code: A010910T

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollment Number: C S J M A 2 4 0 0 0 1 5 9 1 9 0

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

पेपर कोड Paper Code: A 0 1 0 9 1 0 T

Signature of Candidate: Ragini

Signature of Invigilator: Rangh

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें। 2. बॉक्स में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

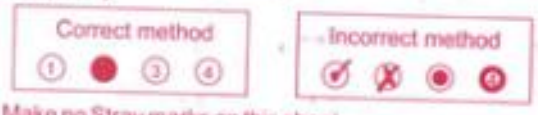

Correct method	Incorrect method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ●

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठो पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठो की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उ पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्र में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा क कार्यवाही नही की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Pape Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damag in your answer script, if found than change the answer scri immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g Subject Code, Subject Name and Question of the Questio Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement o the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over paper should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कही और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनाये क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लाये, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक केल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns.

01

खण्ड → अ

उत्तर संख्या → 1 (क)

साहित्य की शुरुआत आज से लगभग 4000 ई. पू. से हो गई थी। साहित्य लेखन की प्रक्रिया के शुरुआती चरण साहित्य सृजन प्रायः संकेतों, चिन्हों तथा चित्रों द्वारा किया जाता है। कालान्तर में साहित्य सृजन के लिए मुद्राओं तथा चिन्हों द्वारा एक लिपि का विकास हुआ जिसके द्वारा साहित्य लेखन की प्रारम्भिक अवस्था का आविर्भाव हुआ।
साहित्य मानव समाज की मांग ही नहीं वरन आवश्यकता भी है। साहित्य मानव जीवन में उतना ही [illegible] है जितना साहित्य हेतु मानव जीवन। दोनों ही एक दूसरे के पूरक है दोनों ही एक दूसरे की मूलभूत आवश्यकता है।
साहित्य सृजन की प्रारम्भिक चरण में साहित्य का उद्देश्य मात्र व्यवहारिक संचार तथा मानव मनोरंजन था। किंतु कालान्तर में साहित्य मानव समाज की आवश्यकता के रूप में उभरा तथा अपने वर्चस्व की स्थापना की। साहित्य समाज का दर्पण है अतः समाज की दशा को देखने के लिए साहित्य का दर्शन आवश्यक है यह बिना बोले ही समाज की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक व्यवस्था का वर्णन कर देता है।

उत्तर संख्या - 1 (ख)

एनिमेशन फिल्मो का प्रचलन तथा निर्माणकार्य प्रायः बालको के संदर्भ में किया जाता है। एनिमेशन का उपयोग बच्चे अपने मनोरंजन के लिए करते है। एनिमेशन का शाब्दिक अर्थ है सम्बन्धीय शारीरिक दशा Anime + motion को कार्टूनी परिवेश या अन्य विभिन्न रूप तथा आकार देकर बच्चो के सामने प्रदर्शित करने से बच्चे मनोरम विचित्र अनुभव करते है तथा Anime का अत्यन्त आनन्द उठाते है।

एनिमेशन फिल्मो का प्रचलन फिल्मी जगत के प्रारम्भिक [illegible] में नहीं था। वर्तमान के विकसित तकनीकि परिवेश तथा वर्तमान के [illegible] के माध्यम से आज के युग में Animation फिल्मो का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ है तथा इसकी सजीवता एवं प्रस्तुतीकरण के क्रियात्मक ढंग के कारण फिल्मी जगत में इसे खूब ख्याति मिली है। इस प्राप्त प्रसिद्धि एवं ख्याति के कारण एनिमेशन फिल्मो की मांग में बढ़ोत्तरी आयी है तथा आज के युग में जोरों से एनिमेशन फिल्मो का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है।

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

एनिमेशन फिल्मो में मुख्यतः स्वरूप एवं चित्रात्मक ढंग की विशेषता होती है। इसमे मुख्यतः कार्टूनी किस्म की फिल्मे बनायी जाती है इसका मुख्य उद्देश्य छात्र वर्ग के दर्शकों को आकर्षित करना है। एनिमेशन फिल्मों का विश्व सिनेमा जगत में एक महत्वपूर्ण स्थान है इसका प्रचलन सम्पूर्ण संसार में द्रष्टव्य है, एनिमेशन फिल्मो मे मुख्य रूप से जापान, चीन, कोरिया जैसे देश अग्रिम पंक्ति में है। एनिमेशन फिल्मो के कुछ उदाहरण निम्नवत है।

Pickachu या Pokemon
Quasiboovo
Super quick. इत्यादि।

उत्तर सं. 1 (ग)

हिन्दी सिनेमा जगत में फिल्मे कई वर्षों से मनोरंजन के क्षेत्र में अपनी धाक जमाए है। इस क्षेत्र का दिनो दिन विकास होता चला जा रहा है इस जगत में पुनः क्रान्ति की लहर दौड़ रही है इस फिल्मी जगत में इस दौर में फिल्मो के कई प्रकार देखने मे आते है। इस दौर में मुख्यतः फिचर फिल्मे चलन

मे है
टेली फिल्मो का सिनेमा जगत मे बहुप्राय्य है। इनका प्रचलन कई दशको से होता चला आ रहा है
कई रूपों मे देखने को मिलता है।

टेली फिल्मो के अन्तर्गत टेलीविजन मे प्रसारित फिल्मे, धारावाहिक इत्यादि आते ही टेली फिल्मो का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन को सुगम एक सरल तरीके से दर्शक के पास पहुचाना है
टेली फिल्मो मे मुख्यत: सामाजिक, भ्रष्टाचार, तथा राजनीतिक फिल्मे आती है समय नवजागरण की चेतना को प्राप्त अधिकतर रहती है इस प्रकार की फिल्मे सिनेमा जगत मे अति महत्व स्थान रखती है।

टेलीफिल्मो के अध्ययन के लिए अनेक सामग्री की आवश्यकता पड़ती है
टेलीफिल्मो मे काम मे आने वाले तत्वो मे टेलीबोर्ड, फीचर फिल्म तथा पटकथा, लेखन, निर्देशक मण्डल नियमन मण्डल इत्यादि।

उत्तर सं० — 1 (ए)

फिल्म जगत मे फिल्मो के निर्माण मे अनेको कारक भाग लेते है जैसे — पटकथा, पटकथा लेखक, चित्र, चित्रसर्वेक्षक मानचित्र, मेपिंग, लोकेशन, कहानी, कहानी विशेषज्ञवादी, फीचर, हेली फिल्म, रिकॉर्ड निर्देशक, मण्डल इत्यादि।

फिल्मो के निर्माण के सभी कारको मे कला निर्देशक का उत्तरदायित्व सबसे अधिक होता है इसका मुख्य का फिल्म की पटकथा का शोधन तथा इसका निर्माण कार्य मे निर्देशक की भूमिका निभाना।

कला निर्देशक एक बहुआयामी भूमिका निभाने वाला व्यक्तित्व होता है जिसका उद्देश्य फिल्म की पटकथा का अच्छे ढंग से निर्वहन एक फिल्म निर्माण मे त्रुटियों का उन्मूलन।

कला निर्देशक फिल्म निर्माण के कारको के उचित ढंग से प्रयोग करने का उत्तरदायित्व निभाता है तथा स्क्रीन प्ले पर चलने वाले चित्रो का क्रमबद्ध एकत्रित करके उन्हे उचित ढंग से प्रसारित करता है।

पटकथा का फिल्म निर्माण की प्रक्रिया मे उपयोग के समुचित कार्यभार का दायित्व कला निर्देशक का ही होता है तथा वो फिल्मी कारको मे अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

Paper Code

06

उत्तर संख्या 1 (ङ)

सिनेमा जगत का आविर्भाव मुख्यतः 19 वे
दशक में प्रारम्भ हुआ था। इस दशक
में मानव मन में एक नई चेतना
का उदगम हुआ जिसे फिल्म एवं साहित्य
निर्माण से जाना जाता है।
फिल्म के निर्माण में अनेक व्यक्ति
अपनी अपनी भूमिका निभाते हैं। इस
जगत में मुख्य रूप से कुछ किरदार
अपने भूमिका में नजर आते है जैसे
अभिनेता, अभिनेत्री, सहायक कलाकार
सहायक अभिनेत्री अन्य अभिनेता दूत,
प्रोड्यूसर, निर्देशक, कला निर्देशक
स्क्रीन प्ले निर्देशक, कैमरा मैन,
साउंड मैन, सेट मैन इत्यादि
इन सभी किरदारों की सहायता से
एक फिल्म का निर्माण हो पाता है
स्टंटमैन भी फिल्म निर्माण में अपनी
अहम भूमिका निभाते हैं। फिल्म के
निर्माण में ऐसे एक्शन एवं स्टंट जो
अभिनेता द्वारा नहीं किए जा सकते
उन सीनों को करने के लिए एक
प्रोफेशनल की आवश्यकता पड़ती है
जिसे सिनेमा जगत की भाषा में
स्टंटमैन कहते हैं ये व्यक्ति हिन्दी
सिनेमा जगत में अपना अहम
भूमिका निभाते है। इस प्रकार,

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

07

क्रोमाकी स्क्रीन कार्य के लिए एक उस क्षेत्र में प्रशिक्षित व्यक्ति को द्वारा ग्रीन स्क्रीन प्लेट को किया जाता है। इस प्लेट के पश्चात Green Screen की सहायता से स्टंटमैन के स्थान पर अभिनेता का चित्र पुनर्स्थापित कर दिया जाता है। इस प्रकार स्क्रीन के दृश्य में ज्यादा perfection आती है तथा दर्शकों को देखने में वो दृश्य ज्यादा Real लगता है तथा दर्शकों को संतुष्ट करता है।

उत्तर संख्या - 1 (च)

प्रेमचन्द को हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास सम्राट के नाम से जाना जाता है। वे अपने साहित्य के लिए विश्व विख्यात हैं। हिन्दी सिनेमा के आविर्भाव काल में प्रेमचन्द के कई साहित्यिक विधाओं जैसे - उपन्यास, कहानी इत्यादि पर उस समय के निर्देशकों ने अनेक फिल्में बनाई।
प्रेमचन्द साहित्य के क्षेत्र में जाना माना नाम है इनकी साहित्यिक रचनाएं इतनी मनोरंजक एवं संवेदनशील है कि दर्शकों को इनकी बनायी रचनाओं पर बनी फिल्मे

Do Not Write anything in this Portion

में बहुत आकर्षित किया हिन्दी सिनेमा जगत के आविर्भाव काल में प्रेमचन्द के उपन्यास सेवासदन पर एक धारावाहिक बना जो ज्यादा लोकप्रिय न हुआ किन्तु 1940 से 1950 के दशक में प्रेमचन्द के उपन्यास तथा कहानियों पर बने फिल्में और धारावाहिक हिन्दी सिनेमा जगत में बहुत लोकप्रिय हुए तथा सिनेमा निर्माण से प्रेमचन्द के रचनाओं में और अधिक चित्रात्मकता एवं सजीवता आयी। प्रेमचन्द के गद्य तथा पद्य लेखन पर बनी फिल्में निम्नवत एवं निम्नलिखित है—

गबन → गबन (धारावाहिक)

सेवासदन → सेवाभूमि (धारावाहिक)

गोदान → गोदान (धारावाहिक)

निर्मला → निर्मला (धारावाहिक)

दो बैलों की कथा → हीरा और मोती (धारावाहिक

पूस की रात → वन स्त्रेंकिंग नाइट (फिल्म)

शतरंज के खिलाड़ी → स्ट्रीट वन (फिल्म)

उत्तर संख्या - 1 (घ)

हिन्दी फिल्म जगत में स्त्री अस्मिता एक जावार माना जाता है। हिन्दी सिनेमा के प्रारम्भिक दौर में मुख्यतः धार्मिक एवं पौराणिक कथाओं पर फिल्मे बनती थी किन्तु हिन्दी सिनेमा के विकास निरन्तर होता रहा तथा हिन्दी के सिनेमा के 1940 से 1960 के दशक को भारतीय सिनेमा का स्वर्णयुग कहा जाता है। इस दशक में पौराणिकता को दूर करके सामाजिक एवं राजनीतिक फिल्मे का निर्माण हुआ जो अपने किरदारों के लिए बहुत प्रचलन में थी हिन्दी सिनेमा जगत में 1950 के दशक में नारी के सुन्दरता और सरक्षण तथा उनकी शक्ति के उपर कई फिल्मे बनाई गई जिनमे नारी के उज्जवल एवं गम्भीर तथा प्रेम मयी व्यक्तित्व को दर्शाया गया है। इनमे ही स्त्री अस्मिता के व्यक्तित्व पर कई फिल्मो का निर्माण हुआ जो भारतीय सेंसर बोर्ड में काफी प्रचलित हुई स्तम्भर आधारित कुछ फिल्मे निम्नवत है-

- (i) द सडवल लेडी
- (ii) मदर इंडिया (1950)
- (iii) स्टोरी आफ रेशिम गर्ल
- (iv) मधुबाला
- (v) दामिनी सामिनी

Paper Code

उत्तर संख्या — 1 [9]

साहित्य का उद्भव प्राचीन काल में ही हो चुका था। किन्तु अति प्राचीन समय साहित्य का लेखन अधिकतर मुद्राओं, चित्रण एवं लेखों द्वारा किया जाता था। प्राप्त ग्रन्थों के अनुसार साहित्य का उद्भव 4000 ई० पू० ही चुका था। साहित्य का सबसे प्राचीनतम एवं ग्राह्य ग्रंथ ऋग्वेद को माना जाता है जिसका आविर्भाव काल 4000 ई०पू० से 2500 ई०पू० के करीब माना जाता है।

प्राचीन काल में साहित्य के स्थान पर काव्य शब्द का प्रयोग किया जाता था। उस समय काव्य के अंतर्गत साहित्य की सारी विधाएं आती थी। किन्तु कालान्तर में काव्य का अर्थ संकुचित हो गया तथा काव्य का अर्थ सिर्फ कविता से लिया जाने लगा तथा साहित्य के अन्तर्गत सभी विधाएं आने लगी किन्तु हमारे आचार्यों ने काव्य का अनेक परिभाषाएं दी है। जिसमें काव्य के अलग अलग अर्थ बताए गए है। इन आचार्यों में आचार्य विश्वनाथ ने भी काव्य परिभाषा अपने शब्दों में दी है।

" रसात्मक वाक्यम् काव्यम् । "

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार रस युक्त वाक्य ही काव्य है। अर्थात जिन वाक्यो या शब्दो को पढ़ने से ह्रदय से रस की उत्पत्ति होती है उन काव्य कहते है। काव्य का मुख्य उद्देश्य रस निष्पादित करना है। तथा स्वयं को आनन्द का अनुभव करना है। इनके अलावा अन्य आचार्यों ने भी काव्य की अलग अलग परिभाषा दी है जिनमे भरत मुनि, आचार्य भामह इत्यादि प्रमुख है।

प्रश्न संख्या । [झ]

हिन्दी सिनेमा जगत में सिनेमा के लोकप्रिय होने का एक मुख्य कारक है — अभिनय

अभिनय एक कला है जिसका अध्ययन एवं अभ्यास निरन्तर करने की आवश्यकता है अभिनय के श्रेष्ठता से ही फिल्मो मे चित्रात्मक सजीवता आती है तथा अनुभवो का महत्व बढ़ता है। अतः अभिनय सिनेमा निर्माण का अति महत्वपूर्ण कारक है। [illegible] को

Do Not Write anything in this Portion

किसी में जन्मजात होती है तो किसी में निरन्तर अभ्यास के माध्यम से अभिनय के कला का विकास स्वयं ही होता जाता है।

जिस प्रकार रस साहित्य की आत्मा है उसी प्रकार सिनेमा के क्षेत्र में अभिनय सिनेमा की आत्मा है।
अभिनय की उत्कृष्टता से ही हम पात्रो में जान डाल पाते है तथा स्क्रीन के प्लाट को अधिक सजीव दिखा पाते है जो दर्शकों के हृदय को छू जाती है। अच्छा अभिनय उतना ही महत्वपूर्ण है जितना अच्छी स्क्रीप्ट।
इस प्रकार अभिनय अभिनेता की पहचान होती है। अभिनेता को सिनेमा के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाने में अपना योगदान देता है।

खण्ड - ब

उत्तर संख्या - 2

हिन्दी सिनेमा का भारत में आविर्भाव की श्रेय दो फ्रांसीसी बन्धु जिनका नाम लुईस ब्रदर्स या लुई जाता है इन्होंने सर्वप्रथम 1886 में भारत में पहली फिल्म बनाई तथा भारतीयों को सिनेमा जगत से परिचय कराया

इसके पश्चात लहल मणिशाह ने कलकत्ता में पहला अपना टाकिज खोला जिसमें अंग्रेजी फिल्म 'द वाहट' का का प्रसारण हुआ

इस फिल्मों को देखते हुए भारतीय मूल के कई लोगों ने फिल्मों के निर्माण में अपनी रुचि दिखाई। इसमें उस समय सर्वाधिक प्रसिद्ध व्यक्तित्व थे दादा साहेब फाल्के। भारत में सर्वप्रथम भारतीय मूल की फिल्म सावित्री (1912) बनाई गई किन्तु इस फिल्म में न रंग थे ना ही ध्वनि। इस प्रकार के फिल्म से अन्य निर्माताओं में भी फिल्म निर्माण का जोश आया तथा अनेक बड़े व्यक्ति फिल्म निर्माण प्रक्रिया में लग गए।

Do Not Write anything in this Portion

भारतीय मूक की पहली प्रचलित फिल्म राजा हरिश्चन्द्र थी जिसे दादा साहब फाल्के ने 1913 ई० में बनाया यह एक मूक फिल्म थी।
इस फिल्म से ही भारत में सिनेमा की शुरुआत माना जाता है।

सिनेमा निर्माण —

सिनेमा के निर्माण प्रक्रिया अनेक घटक प्रयोग में लाए जाते जाते है तब जाकर एक फिल्म का निर्माण हो जाता है।
सिनेमा निर्माण में मुख्यतः निम्न वस्तुओ का मूलतः प्रयोग होता है तथा ये अपना योगदान देते है।

(i) पूंजीपति वर्ग (ii) निर्देशन पक्ष
(iii) कला पक्ष (iv) साहित्यिक पक्ष
(v) सामयिक पक्ष।

कला पक्ष

सिनेमा के निर्माण में कला पक्ष का सर्वाधिक योग रहता है इसके प्रयोग से यह देखा है कि सिनेमा के निर्माण में किसी कठिनाइयां आती

है जिनका अनुसरण करके सिनेमा निर्माण का कार्य अग्रसरित हो जाता है।

सिनेमा निर्माण के कला पक्ष के अन्तर्गत अनेक घटक आते हैं जिनका सिनेमा निर्माण में अत्यन्त महत्व होता है इन घटकों में कुछ निम्नवत है—

(i) कहानी सामग्री (vii) निर्देशक
(ii) निर्देशक मण्डल (viii) कला निर्देशक
(iii) पटकथा (ix) कैमरा मैन
(iv) पटकथा लेखक (x) स्टंट मैन
(v) साउण्ड इफेक्ट (xi) अभिनेता तथा अभिनेत्री
(vi) फीचर (xii) टैलीविजन

कहानी सामग्री— सिनेमा निर्माण में कहानी या कथा का अत्यन्त महत्व है कहानी सामग्री के सहायता से हम दृश्यों को स्क्रीनप्ले में परिवर्तित करते हैं तथा शार्ट को सेट करते हैं।

निर्देशक मण्डल— फिल्म का एक महत्वपूर्ण घटक है निर्देशक मण्डल। निर्देशक मण्डल फिल्म के निर्माण की दिशा तथा दशा तय करते हैं तथा फिल्म के सफल निर्माण तथा [illegible] को उसका को ध्यान में रखकर अपना उत्तरदायित्व निभाते हैं। इस प्रकार निर्देशक मण्डल फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अति महत्वपूर्ण घटक है

पटकथा – हिन्दी साहित्य मे जिस प्रकार कथा या विधा की महत्व होता है उसी प्रकार फिल्म निर्माण मे पटकथा एक अत्यन्त आवश्यक घटक है फिल्म की लोकप्रियता अधिकतम पटकथा पर ही आधारित है।

पटकथा लेखक – जिस प्रकार साहित्य के [illegible] निर्माण के लिए एक अच्छे साहित्यकार की आवश्यकता होती है उसी प्रकार अच्छी फिल्म के निर्माण के लिए एक अच्छे पटकथा लेखक की आवश्यकता होती है। फिल्म के डायलाग पटकथा लेखक के द्वारा ही सम्पादित किये जाते है।

साउण्ड इफेक्ट — फिल्म के निर्माण मे उसकी पटकथा के अच्छे होने के साथ साथ साउण्ड इफेक्ट भी अच्छा होना चाहिए क्योंकि अच्छे साउण्ड सिस्टम के बिना फिल्म भी अच्छा किया गया अभिनय बेजान व बेकार लगता है।

फीचर — फिल्म के निर्माण के आरम्भ मे मुख्यत डॉक्यूमेंट्री फिल्मो का निर्माण अधिक होता था किन्तु कालान्तर मे फीचर फिल्मो की मांग पर

गई है। तथा फीचर फिल्मे आज के समय मे अधिक लोकप्रिय है।

निर्देशक :- फिल्म के निर्माण मे लगने वाले अन्य घटको की भांति निर्देशक भी फिल्म निर्माण अति महत्वपूर्ण कारक है फिल्म के निर्माण मे अभिनेता तथा अन्य व्यक्तियो को निर्देश देने का कार्य निर्देशक ही करता है एक अच्छा निर्देशक एक अच्छी फिल्म का निर्माण करता है।

डायॅलाग :- फिल्म के निर्माण मे तो नही वरन फिल्म के लोकप्रिय होने मे डायलॉग अति ... भूमिका निभाते है जिनका प्रचलन सालो साल रहता है। अच्छे डायलाग से फिल्म अधिक लोकप्रिय होती है।

कैमरामैन — फिल्म के निर्माण मे जितना महत्व पटकथा लेखक का होता है उतना ही महत्व कैमरा मैन का होता है फिल्म के दृश्यों को अच्छे से कैप्चर करने के लिए एक अच्छे कैमरामैन की आवश्यकता होती है कैमरा मैन दृश्यो को अलग-अलग एंगल से लेकर स्क्रीन शाट को और अधिक सजीव बना देता है।

स्टंट मैन — फिल्म मे कुछ दृश्यो को करने मे जब अभिनेता असमर्थ

Do Not Write anything in this Portion

होते है तो इन शॉटी को करने के लिए एक प्रोफेशनल व्यक्ति द्वारा इन सम्पन्न किया जाता है जिसे स्टंट मैन कहते है।

अभिनयकर्ता- फिल्म के निर्माण के लिए एक अभिनयकर्ता महत्वपूर्ण है उसके द्वारा फिल्म निर्माण मे पात्र। अच्छे कलाकारो के अच्छी और रोचक साहित्य का निर्माण होता है और अच्छे अभिनयकर्ताओ से अच्छे फिल्म का निर्माण होता है।

खण्ड – स

उत्तर संख्या — 7

भारत मे हिन्दी सिनेमा का निर्माण मुख्यत: विदेशो मे प्रचलित सिनेमाओ के प्रभाव से शुरू हुआ।
भारत मे सिनेमा का निर्माण मुख्यत: 1900 के सन् मे प्रारम्भ हुआ।

भारतीय सिनेमा को वर्तमान दौर मे मुख्यत: बालीवुड के नाम से जाना जाता है इसके अलावा अन्य देशो मे विश्व स्तर मे Hollywood या Tollywood नाम प्रचलित है।

सिनेमा का मुख्य उद्देश्य है दर्शको का मनोरंजन किंतु साहित्य की भाति व सिनेमा का भी बहुआयामी क्षेत्र है तथा इसके बहुआयामी उद्देश्य है।

भारत मे सिनेमा की शुरुआती दौर मे भक्ति तथा पौराणिक फिल्मो का निर्माण हुआ क्योंकि इसे बनाने मे आसानी रहती थी इसे बनाने के लिए प्राय: बनी बनायी पटकथा मिल जाती थी।

Do Not Write anything in this Portion

स्वातंत्र्योत्तर युगीन सिनेमा

स्वतंत्रता से पूर्व सिनेमा का प्रचलन प्रारम्भ हो गया था। इस दौर में कई लोकप्रिय फिल्मों का निर्माण हो चुका था।

सिनेमा का उद्भव –

भारत में सिनेमा का उद्भव मुख्यतः दादा साहेब फाल्के की पहली मूक फिल्म राजा हरिश्चन्द्र से माना जाता है जिसका प्रकाशन 1913 में हुआ तत्पश्चात हिंदी सिनेमा जगत में फिल्मों के निर्माण की उत्तम शुरुआत हुई।

1930 का दशक –

राजा हरिश्चन्द्र के पश्चात 1930 के दशक में आर्देशिर ईरानी ने पहली बोलती फिल्म 1931 में बनाई जिसका नाम था आलम आरा।

इनकी ये फिल्म बहुत प्रचलित हुए इसके बाद अन्य निर्देशकों ने भी बोलती फिल्मों के निर्माण शुरू कर दिया।

Do Not Write anything in this Portion

1957 ई० ——→ मदर इंडिया [आमीर हिसनी]
1938 ई० ——→ सत्या (आमीर इरानी)

1940 का दशक — बोलती फिल्मों के प्रकाशन के पश्चात हिन्दी सिनेमा के क्षेत्र में क्रांति सी आ गई। इसके पश्चात 1940 के दशक में मुख्यत: अधिक आधारित तथा सामाजिक फिल्में बनती थी जिसमें समाज के दर्शन होते थे
1940 के दशक में द्वितीय विश्व के प्रभाव से हिन्दी सिनेमा जगत में देशभक्ति के फिल्मों का अधिक प्रचलन हुआ। तथा देशभक्ति इस तौर के फिल्मों का मुख्य धारक बन गया था।

सिनेमा का विकास —

1950 से 1960 का दशक —

देशभक्ति तथा सामाजिक फिल्मों के पश्चात हिन्दी सिनेमा जगत में मुख्यत: अलग अलग व्यक्तित्व पर फिल्मों का आरम्भ हुआ इस काल में फिल्मों में पौराणिकता तथा सामाजिकता से हटकर सामाजिक मुद्दों पर फिल्मों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। इस युग प्रमुख अभिनेता में ——→ देवानंद
राज कपूर
राजेश खन्ना
शम्मी कपूर इत्यादि तथा

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

22

इस युग के अभिनेत्रियों मे —

मधुबाला
रेशमा बानो
नरगिस
फरीदा शाह इत्यादि प्रचलित तथा लोकप्रिय रही

इस दशक को हिन्दी सिनेमा का स्वर्णयुग कहा गया क्योंकि इस युग मे फिल्मों का आयाम बहुत बढ़ गया था।

1980 से 1990 का दशक —

इस समय मे पौराणिक तथा सामाजिक मुद्दों से हटकर अन्य विषयों पर फिल्मे बनी इस युग मे अमिताभ बच्चन अपने एंग्री यंग मैन के किरदार के लिए अति प्रचलित रहे तथा इन्होने अन्य प्रकार के फिल्मों के क्षेत्र में क्रांति ला दी।

इस दशक के प्रसिद्ध अभिनेता मे — धर्मेंद्र
अमिताभ बच्चन
ऋषि कपूर

इस दशक के अभिनेत्री मे — माधुरी दीक्षित
रेखा
- जया बच्चन
हेमा मालिनी

इत्यादि प्रसिद्ध हुए।

1990 से 2000 का दशक —

इस दशक में सामाजिकता से हटकर अन्य विषय जैसे पारिवारिकता, प्रेम तथा त्याग पर फिल्मे को इस दशक के फिल्मो ने अधिक लोकप्रियता कमाई इस दशक के फिल्मो में —

मैंने प्यार किया (1990)
दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे (1995)
हम आपके है कौन (1996)

ये फिल्मे इस दशक में अधिक प्रसिद्ध रही।

2000 से अब तक का दशक —

2000 ई के बाद के समय क मे दुनिया के विज्ञान के क्षेत्र में क्रांति ला दी इस प्रकार इसमे अनेक परिवर्तन आए तथा तंत्रमानिकता को अनुसार बनाकर अनेक प्रकार की फिल्मो क प्रचार प्रसार हुआ इस युग के अभिनेताओ में — अनिल कपूर, सलमान खान, शाहरूख खान इत्यादि अभिनेता प्रसिद्ध रहे। तथा अभिनेत्रियों में माधुरी दीक्षित, करीना कपूर, करीश्मा कपूर इत्यादि प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय रही।

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion